सोशलिज़्म और इस्लाम

हुज्जतुल इस्लाम वलमुस्लिमीन मौलाना सै० हसन नक़वी साहब

किसी उसूल का मुबल्लिग़ जितना कामिल होगा उतना ही वह उसूल हमागीर और हरदिल अज़ीज़ होगा। ये खुली बात है कि किसी कमेटी या किसी अन्जुमन के लिए कुछ क़ानून एक अन्जान शख़्स बनाए तो वह रद कर दिये जाएंगे और उसी अन्जुमन के लिए कुछ क़ानून कोई बाख़बर सियासतदाँ बनाता है तो वह मन्ज़ूर किये जाते हैं इसकी वजह ये मालूम होती है कि पहले शख़्स के तैयार किये हुए उसूल अगर नुक़सान पहुँचाने वाले न भी हों तो शायद किसी शख़्स के या किसी ख़ास जमाअत के फ़ायदे में महदूद हों या सियासी हैसियत से कमज़ोर हों। लेकिन वह माहिरे फ़न जो क़ानून बनाता है वह (अगर ईमानदारी से बनाए) पूरी अन्जुमन या पूरे मुल्क के लिए फ़ायदेमन्द और हमागीर होते हैं अब इस क़ायदे के बाद देखना है कि इस्लाम बेहतर है या सोशलिज़्म? इस के क़ानून ज़्यादा हमागीर हैं या उसके। अगर ये देखना है तो उनके क़ानून बनाने वालों और उनके मुबल्लिग़ों पर नज़र कीजिये। सोशलिज़्म का बनाने वाला भी माद्दी इन्सान था और उसकी तबलीग़ करने वाला भी माद्दी इन्सान था मुबल्लिग़ और ईजाद करने वाला दोनों किसी ख़ानदान के लोग थे किसी मुल्क के रहने वाले थे, किसी क़ौम से ताल्लुक़ रखते थे इसलिए इन क़ानूनों में भी कभी मुल्क, कभी क़ौमी, कभी ख़ानदानी फ़ायदे का ख़याल रखना लाज़मी बात है इसलिए यह हमागीर नहीं हो सकते। लेकिन इस्लाम का क़ानून बनाने वाला वह था जो न किसी मुल्क का रहने वाला, न उसको किसी ख़ानदान से ताल्लुक़, न किसी क़ौम से सरोकार, न किसी मकान से मुहब्बत, न किसी सरज़मीन से उलफ़त, बल्कि उसके लिए सब बराबर हैं और उसने मुबल्लिग़ भी ऐसे को बनाया जिसके लिए पहले कह दिया था कि ***''वमा अरसलनाका इल्ला रहमतुल लिलआलमीन''*** और कभी इरशाद हुआ ***''तबारकल्लज़ी नज़्ज़लल फ़ुरक़ान अला अब्दिही लियकूना लिलआलमीना नज़ीरा''*** मालूम होता है कि बस सिर्फ़ इस्लामी क़ानून ही हमागीर हो सकते हैं।

इस्लाम ने भी दुनिया में आकर इन्क़ेलाब पैदा किया और सोशलिज़्म ने भी, इस्लाम भी बराबरी को क़ायम रखने वाला है और सोशलिज़्म भी, मगर दोनों में फ़र्क़ है। सोशलिज़्म ने माद्दी इन्क़ेलाब पैदा करके चाहा कि ज़हनियत बदल जाए और इस्लाम ने ज़हनी इन्क़ेलाब पैदा किया ताकि माद्दी इन्क़ेलाब अपने आप आ जाए और यही सबब है कि सोशलिज़्म से सरमायेदार अलग हो गये, मगर इस्लाम में ग़रीब और अमीर सब दाख़िल हैं। सोशलिज़्म से अगर सरमायेदारी ख़त्म की तो सरमायेदार अलग हो गये। मगर इस्लाम ने चूँकि ज़हन बदल दिया था इसलिए सरमायेदार सरमायेदारी ख़त्म होने के बाद भी खुश रहे। इस्लाम ने कभी खुम्स के नाम से कभी ज़कात के नाम से तो कभी सदक़ात के नाम से सरमायेदारी ख़त्म कर दी। सोशलिज़्म ने सरमायेदारी ख़त्म की तो इस तरह कि सरमायेदारों से छीन कर यानी सोशलिज़्म ने इन्सान को ग़रीब बनाकर सरमायेदारी ख़त्म की। और इस्लाम ने सबको अमीर बनाकर बराबरी क़ायम की। इस्लाम की ये कोशिश है कि इस खुम्स व ज़कात और सदक़ात ही की वजह से ग़रीब खुद सरमायेदार हो जाएं ताकि बराबरी क़ायम हो जाए और नाजायज़ सरमायेदारी ख़त्म हो जाए।

रसूल अकरम[स०] ने आकर सबसे पहले माद्दी

बड़कपन को मिटाना शुरु कर दिया कि इन्सान इन्सान सब बराबर हैं नसली बुलन्दी, बुलन्दी की वजह नहीं बादशाहत फ़ख़्र की वजह नहीं, हुकूमत व दौलत फ़ख़्र करने वाली नहीं, इज़्ज़त व मालदारी फ़ज़ीलत की वजह नहीं। रसूल[स॰] ने इन फ़ख़्र करने वालों को समझा दिया कि जिनको तुम नीचा समझ रहे हो, वह नीचा नहीं है।

पस्ती की तरफ़ कभी हिक़ारत से न देख
पस्ती से बुलन्दी के निशाँ मिलते हैं

बल्कि जो तुम में अमली मैदान में आगे होगा बस वही बुलन्द है। और आप देख लें कि माद्दी बड़कपन ही की वजह से क़ौमें बर्बाद हुईं मुल्क तबाह हुए हुकूमतें हारीं और बादशाहतें ख़त्म हुईं पुरानी तहज़ीब को ज़िन्दा करने की चाहत ने रूम की सलतनत को बर्बाद किया, साम्राजी और पुराने उसूलों की पूजा की ज़िद ने बिर्टेन को परेशान किया, शहंशाहियत और दक़ियानूसी ने जापान को कुँए में झोंका, नसली फ़ख़्र की धुन ने जर्मनी को तबाह किया, ख़ुद परस्ती लालच ने अरबों को दरिन्दा बना दिया इन सब में एक को और कभी सबको इख़्तियार करने की नामुबारक कोशिश ने हिन्दुस्तान को जाहिल और ग़ुलाम बना रखा था।

जब तक इन्सान एक होकर किसी ऐसे क़ानून पर अमल न करेगा जो उसको इन्सानियत के लिए पैदा करने वाले की मुहब्बत में डुबोकर पूरी मख़लूक़ को प्यार करने पर मजबूर न कर दे इस वक़्त तक हमेशा उसके सामने जेहालत, ग़ुलामी, तबाही, बर्बादी और जंग के दरवाज़े खुले रहेंगे।

और ऐसा क़ानून रसूल[स॰] ने पेश कर दिया, जिसने माद्दी इम्तियाज़ों को मिटा दिया, नसली फ़ख़्र ख़त्म कर दिये, रईस और ग़रीब को भाई बना दिया, मुफ़लिस को बादशाह का क़रीबी बना दिया, ग़ुलाम को मालिक का एहतेराम क़ायम रखते हुए साथी बना दिया, हाकिम और महकूम के फ़र्क़ को ख़त्म कर दिया बल्कि यूँ अर्ज़ करूँ

एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूदो अयाज़
न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दा नवाज़

अरब की सी जाहिल क़ौम को रसूल[स॰] ने अपनी अच्छी सीरत, अच्छे अख़लाक़ और बुलन्द किरदार से बुलन्द करना शुरु किया वह क़ौम को जिनके यहाँ लूट लेना फ़ख़्र था, क़त्ल कर देना तारीफ़ के क़ाबिल था, ज़ुल्म करना तारीफ़ के लायक़ था, वह अरब जिनके यहाँ जुआ खेलना, शराब पीना, इन्सानों के ख़ून से हाथ रंगना एक मामूली बात थी ख़ुद ज़ुल्म सहे तकलीफ़ें उठायीं मगर रसूल[स॰] ने अपने बुलन्द किरदार से जाहिल अरबों के गन्दे माहौल को बदल दिया और साबित कर दिया कि

माहौल से इन्सान नहीं बनता है
इन्सान से माहौल बना करता है

हैवानियत मिटायी, इन्सानियत की ख़ुशबू पैदा की, ज़ुल्म की हुकूमत ख़त्म की, इन्साफ़ की हुकूमत क़ायम की, ख़ुदसरी के लशकरों को हराया, मेहरबानी के ढोल बजाए, नफ़रत की फ़ौजें झुक गयीं, मुहब्बत के परचम लहराए, हैवानियत के तख़्ते उलट दिये, इन्सानियत की बिसात बिछायी, इन्सानों में इन्सानियत आ गयी।

एक अकेला मुबल्लिग़ और एक कमसिन बच्चा, और एक कमज़ोर औरत मददगार और पूरा अरब ख़ून का प्यासा, अपने पराये हो गये अमीन और सादिक़ कहने वाले दुश्मन हो गये।

दौलत और हुकूमत की लालच, खूबसूरती की चाहत और क़ूवतों के ज़ोर लगाये जा रहे हैं मगर रसूल[स॰] अपने काम में लगे हुए हैं इन्सानों में हक़ परस्ती की सच्ची और कभी न ख़त्म होने वाली स्प्रिट पैदा कर रहे हैं और फिर कामयाबी होते-होते रसूल[स॰] ने हक़ परस्त और बेयारो मददगार क़ौमों को बता दिया कि

ताक़तों से न डर के रोक क़दम
जब्र में इख़्तियार होता है

अगर तुम में हक़ परस्ती है और तुम्हारे उसूल फितरत के बनाये हुए उसूल हैं, तुम भी मेरी ही तरह बिना तलवार उठाये हुए, बिना जंग किये हुए, जबरूतियत के तख़्ते उलट सकते हो, तशद्दुद के ताज छीन सकते हो, बहीमियत के लशकरों को शिकस्त दे सकते हो। मेरी पैरवी करके इन्सान को शाहकार इन्सानियत और ताजे बशरियत पहना सकते हो।

